Theory of Causation
कारणता सिद्धान्त

अरस्तू का कारणता सिद्धान्त तत्वशास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग है उन्होंने कारणता को एक व्यापक रूप में प्रस्तुत किया है उनके अनुसार मृत्यु का कारण बन्दूक की गोली होती है लेकिन यह कारण मात्र प्रतीति है वास्तविक कारण तो हृदय गति का रुकना है इसे विवेकशील कारण कहते हैं। अरस्तू ने इसी अर्थ में कारणता को समझा है उन्होंने चार प्रकार के कारण बताये हैं ये हैं —

1. उपादान कारण — Material Cause
2. निमित्त कारण — Efficient Cause
3. स्वरूप कारण — Formal Cause
4. लक्ष्य कारण — Final Cause

(1) उपादान कारण — उपादान कारण किसी वस्तु का वह द्रव्य है जिससे वस्तु का निर्माण होता है। जैसे - बढ़ई किसी न किसी प्रकार की लकड़ी से पलंग का निर्माण करता है इसलिए लकड़ी को उपादान कारण कहा जा सकता है। उपादान कारण वह कच्ची सामग्री है जिससे बाद में वस्तु का निर्माण होता है।

(2) निमित्त कारण — निमित्त कारण परिवर्तन का मुख्य आधार होता है। ~~जिसके द्वारा वस्तु के स्थान पर स्वभाव में परिवर्तन किया जाता~~ है। परिवर्तन के अंतर्गत केवल वस्तुओं का स्थान परिवर्तन ही नहीं वरन् उनका स्वभाव परिवर्तन भी सम्मिलित रहता है। जैसे पलंग के निर्माण में बढ़ई निमित्त कारण है जो विभिन्न औजारों का प्रयोग करके लकड़ी को काट कर उसके रूप में परिवर्तन कर देता है।

(3) स्वरूप कारण — स्वरूप कारण वस्तु का सार या मूल तत्व होता है जिसे वस्तु की परिभाषा के द्वारा व्यक्त किया जाता है। जैसे - पलंग के

निर्माण में उसका रूप और गुण जो वह
के मस्तिष्क में पहले से है, वे स्वरूप कारण
कहलाते हैं।

(iv) लक्ष्य कारण – लक्ष्य कारण वह परम लक्ष्य है
जिसके लिए वस्तु लक्ष्य वस्तु के विभिन्न क्रियाएँ की हैं।
लक्ष्य कारणों की ओर उन्मुख होकर वस्तु
की रचना की प्रत्येक क्रिया की जाती है।

अरस्तू के यह चार 'कारण सिद्धान्त'
क्रमिक नहीं होते हैं। किसी वस्तु की उत्पत्ति
में चारों एक साथ ही क्रियाशील होते हैं।
जैसे – संगमरमर की मूर्ति के निर्माण में –
संगमरमर, निर्माता, निर्माता के मस्तिष्क में
प्रतिमा का स्वरूप और प्रतिमा बनाने के
लक्ष्य इन चारों की क्रियाशीलता की एक
साथ आवश्यकता होती है।

— x — x — x —

ोष कारणता

अरस्तू के अनुसार संपूर्ण जगत की व्याख्या एवम् किसी घटना के घटित होने के लिए चारों कारणों का होना आवश्यक है। चारों कारण पुनः दो कारणों में परिणित हो जाते हैं -

(2)

~~में समानता~~

वस्तु निर्माण के लिए सामग्री की आवश्यकता होती है। अतः उपादान कारण की अपनी आवश्यकता है। निमित्त कारण का अन्तर्भाव लक्ष्य कारण में हो जाता है। गति एवं परिवर्तन किसी के लिए होता है और वह है लक्ष्य, बिना लक्ष्य के निमित्त का अपना कोई प्रयोजन नहीं होता है। अतः निमित्त का अन्तर्भाव लक्ष्य में हो जाता है। लक्ष्य कारण की सिद्धि पहले ही अमूर्त या अव्यक्त रूप में स्वरूप में हो जाती है। अतः अंत में दो ही कारण शेष रहते है —

1. उपादान कारण (द्रव्य)
2. निमित्त कारण, स्वरूप कारण, लक्ष्य कारण = स्वरूप कारण

- इस सिद्धान्त का महत्व इसमे निहित है कि अरस्तु इससे जगत की भौतिक सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था की वैज्ञानिक, तार्किक व्याख्या करते है तथा जगत की विभिन्न वस्तुओं एवम् घटनाओं के मध्य संतुलन व संबंध की व्याख्या है।

समीक्षा

अरस्तू का कारणतावाद तथ्यपरक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है किन्तु आधुनिक दार्शनिक ह्यूम उक्त मान्यता को अस्वीकार करते है। उनके अनुसार

1. कारण केवल एक निमित्त होता है जिसे हम गति/परिवर्तन के रूप में स्वीकारते है।
2. अरस्तू का कारणतावाद आत्माश्रय दोष से ग्रसित है जिसमें लक्ष्य कारण की सिद्धि पहले ~~ही~~ स्वरूप कारण में हो जाती है।

आत्माश्रय

ह्यूम (1) निमित्त को ही स्वीकार करता। दोष निमित्त में ही निहित है।
(2) आत्माश्रय दोष (सुरज ...)
(3) अनुभवातीत अनुभूति पर आधारित ...

3. इसे तथ्यपरक घटनाओं पर तो लागू किया जा सकता है किन्तु मानवीय अनुभूतियों पर नहीं।
4. भौतिक - रासायनिक घटनाओं की व्याख्या कारणतावाद से संभव नहीं है जैसे 0° पर जल बर्फ में बदलता है। यहाँ इसके चार कारणों को ढूँढना हास्यास्पद है।
5. अरस्तू इस सिद्धान्त में वस्तु के पूर्ण विनाश को नहीं स्वीकारते। वे केवल उत्तरोत्तर विकास स्वीकारते हैं जो वैज्ञानिक मान्यताओं के विपरीत है।
6. स्वरूप एवं लक्ष्य कारण काल के दृष्टिकोण से पहले नहीं हो सकते हैं। इन्हें केवल वैचारिक स्तर पर ही कार्य से पहले स्वीकार कर सकते हैं।

निष्कर्षत: - अरस्तू की कारणतावादी व्याख्या परंपरागत अर्थ को स्पष्ट करने में तो समर्थ है किन्तु इसकी आधुनिक ज्ञानिक व्याख्या संभव नहीं है। इस सिद्धान्त का महत्व इसमें है कि अरस्तू इस सिद्धान्त से जगत की वैज्ञानिक व्याख्या द्रव्य एवं आकार के आधार पर कर जगत की महत्ता व गरिमा को पुनः स्थापित करते हैं। इसीलिए कहा गया है कि जहाँ प्लेटो की दोनों आँखें ऊपर (प्रत्यय [illegible] हैं वहीं अरस्तू की दोनों आँखें नीचे (इंद्रिय जगत) हैं।